# ॐ श्री कृष्ण शरणं मम ॐ
# 卐 विभूतियोग नामक दसवा अध्याय 卐

ठाकुर भिम सिंह द्वारा प्रस्तुत
श्रीमद्भगवद्गीता अमृत
श्लोकों के गूढ़ रहस्यों के साथ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

# विभूतियोग- नामक दसवाँ अध्याय

01-07 भगवान की विभूति और योगशक्ति का कथन तथा उनके जानने का फल

08-11 फल और प्रभाव सहित भक्तियोग का कथन

12-18 अर्जुन द्वारा भगवान की स्तुति तथा विभूति और योगशक्ति को कहने के लिए प्रार्थना

19-42 भगवान द्वारा अपनी विभूतियों और योगशक्ति का कथन

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।
यत् तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥

श्रीभगवान बोले— हे अर्जुन, मेरे परम वचन को तुम फिर सुनो, जिसे मैं **तुम जैसे अतिशय प्रेम रखने वाले के हित के लिए कहूंगा**. (१०.०१)

BG 10.1: The Lord said: Listen again to My divine teachings, O mighty armed one. Desiring your welfare because you are My beloved friend, I shall reveal them to you.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहम् आदिर् हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥२॥

मेरी उत्पत्ति को देवता, महर्षि आदि कोई भी नहीं जानते हैं; क्योंकि मैं सभी देवताओं और महर्षियों का भी आदिकारण हूं. (१०.०२)

BG 10.2: Neither celestial gods nor the great sages know of My origin. I am the source from which the gods and great seers come.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यो माम् अजम् अनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३॥

जो मुझे अजन्मा, अनादि और समस्त लोकों के महान् ईश्वर के रूप में जानता है, वह मनुष्यों में ज्ञानी है और सब पापों से मुक्त हो जाता है. (१०.०३)

BG 10.3: Those who know Me as unborn and beginningless, and as the Supreme Lord of the universe, they among mortals are free from illusion and released from all evils.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

बुद्धिर् ज्ञानम् असंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयम् एव च ॥४॥
अहिंसा समता तुष्टिस् तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥५॥

बुद्धि, ज्ञान, भ्रम का अभाव, क्षमा, सत्य, इन्द्रिय संयम, मन संयम, सुख, दुःख, उत्पत्ति, प्रलय, भय, अभय, अहिंसा, समता, संतोष, तप, दान, यश, अपयश आदि प्राणियों के अनेक प्रकार के भाव मुझसे ही प्रकट होते हैं. (१०.०४-०५)

BG 10.4-5: From Me alone arise the varieties of qualities in humans, such as intellect, knowledge, clarity of thought, forgiveness, truthfulness, control over the senses and mind, joy and sorrow, birth and death, fear and courage, non-violence, equanimity, contentment, austerity, charity, fame, and infamy.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस् तथा ।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥६॥

सात महर्षि, उनसे पहले चार सनकादि तथा चौदह मनु ये सब मेरे संकल्प से उत्पन्न हुए हैं, जिनकी संसार में ये सारी प्रजा हैं. (१०.०६)।

BG 10.6: The seven great Sages, the four great Saints before them, and the fourteen Manus, are all born from My mind. From them, all the people in the world have descended.

**सात महार्षि –**

**1st Manwantar – मारिच, अत्रि, अन्गिरा, वसिष्ट, पुलसत्य,पुलाह और क्रतु ।**

**7th Manwantar – Vasistha, Bharadvaja, Jamadagni, Gautama, Atri, Visvamitra, and Kashyap.**

**सनकाादि – सनक, सनन्दन, सनातन और सनतकुमार ।**

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः ।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥७॥

जो मनुष्य मेरी इस विभूति और योगमाया को तत्त्व से जानता है, वह अविचल भक्तियोग से युक्त हो जाता है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है. (१०.०७).

BG 10.7: Those who know in truth My glories and divine powers become united with Me through unwavering Bhakti Yog. Of this there is no doubt.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ८ - **अहं सर्वस्य प्रभवो, मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।**
**इति मत्वा भजन्ते मां, बुधा भाव समन्विता**

मैं संसारमात्र का प्रभव (मूल कारण) हूँ, और मुझ से ही सारा संसार प्रवृत्त हो रहा है अर्थात्, चेष्टा कर रहा है - ऐसा मान कर मुझ में श्रद्धा-प्रेम रखते हुए बुद्धिमान भक्त मेरा ही भजन करते हैं - सब प्रकार से मेरे ही शरण होते हैं ।

मानस (मन से), नादज (नाद से), बिन्दुज (वीर्य), उद्भिज्ज, जरायुज, अण्डज, स्वेदज आदि अर्थात्, जड़-चेतन, स्थावर-जङ्गम यावन्मात्र जितने प्राणी पैदा होते हैं, उन सबकी उत्पति के मूल में परमपिता परमेश्वर के रूप में मैं ही हूँ ।

I am the primary cause of the whole creation. From me, all things move. The wise, knowing this and full of faith and devotion, continually worship me viz., they take refuge in me alone.

The lord is the material and efficient cause of all creatures, born through mind, word, semen, earth, womb, egg and sweat viz., He is the origin of the whole creation, sentient (स्थाई), or insentient (अस्थाई),, moving or unmoving. He is the material cause as well as the efficient cause of the entire creation. It means that he has manifested Himself in the form of the entire creation.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥६॥

मुझ में ही चित्त को स्थिर रखने वाले और मेरी शरण में आने वाले भक्तजन आपस में मेरे गुण, प्रभाव आदि का कथन करते हुए निरन्तर संतुष्ट रहकर रमते हैं. (१०.०६)

BG 10.9: With their minds fixed on Me and their lives surrendered to Me, My devotees remain ever content in Me. They derive great satisfaction and bliss in enlightening one another about Me and in conversing about My glories.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन माम् उपयान्ति ते ॥१०॥

निरन्तर मेरे ध्यान में लगे प्रेमपूर्वक मेरा भजन करने वाले भक्तों को मैं ब्रह्मज्ञान और विवेक देता हूं, जिससे वे मुझे प्राप्त करते हैं. (१०.१०)

BG 10.10: To those whose minds are always united with Me in loving devotion, I give the divine knowledge by which they can attain Me.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

तेषाम् एवानुकम्पार्थम् अहम् अज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्य् आत्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥११॥

उनपर कृपा करके उनके अन्तःकरण में रहने वाला, मैं, उनके अज्ञानजनित अन्धकार को तत्त्वज्ञानरूपी दीपक द्वारा नष्ट कर देता हूं. (१०.११)

BG 10.11: Out of compassion for them, I, who dwell within their hearts, destroy the darkness born of ignorance, with the luminous lamp of knowledge.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् ।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यम् आदिदेवम् अजं विभुम् ॥१२॥
आहुस् त्वाम् ऋषयः सर्वे देवर्षिर् नारदस् तथा ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥

अर्जुन बोले— आप परमब्रह्म, परमधाम और परमपवित्र हैं; आप शाश्वत (नित्य) दिव्य पुरुष आदिदेव, अजन्मा और सर्वव्यापी हैं; ऐसा देवर्षि नारद, असित, देवल, व्यास आदि समस्त ऋषिजन तथा स्वयं आप भी मुझसे कहते हैं. (१०.१२-१३)

BG 10.12-13: Arjun said: You are the Supreme Divine Personality, the Supreme Abode, the Supreme Purifier, the Eternal God, the Primal Being, the Unborn, and the Greatest. The great sages, like Narad, Asit, Deval, and Vyas, proclaimed this, and now You are declaring it to me Yourself.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सर्वम् एतद् ऋतं मन्ये यन् मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन् व्यक्तिं विदुर् देवा न दानवाः ॥१४॥

हे केशव, मुझसे आप जो कुछ कह रहे हैं इन सबको मैं सत्य मानता हूं. हे भगवन्, आपके वास्तविक (Actual) स्वरूप को न देवता जानते हैं और न दानव. (४.०६ भी देखें) (१०.१४)

BG 10.14: O Krishna, I totally accept everything You have told me as the Truth. O Lord, neither gods nor the demons can understand Your true personality.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

स्वयम् एवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥

हे प्राणियों को उत्पन्न करने वाले, हे भूतेश, हे देवों के देव, जगत के स्वामी, पुरुषोत्तम, केवल आप स्वयं ही अपने आपको जानते हैं. (१०.१५)

BG 10.15: Indeed, You alone know Yourself by Your inconceivable energy, O Supreme Personality, the Creator and Lord of all beings, the God of gods, and the Lord of the universe!

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

वक्तुम् अर्हस्य् अशेषेण दिव्या ह्य् आत्मविभूतयः ।
याभिर् विभूतिभिर् लोकान् इमांस् त्वं व्याप्य तिष्ठसि ॥१६॥
कथं विद्याम् अहं योगिंस् त्वां सदा परिचिन्तयन्
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन् मया ॥१७॥

अतः अपनी उन दिव्य विभूतियों को — जिनसे आप इन सम्पूर्ण लोकों में व्याप्त होकर स्थित रहते हैं — पूर्णरूपसे वर्णन करने में केवल आप ही समर्थ हैं. (१०.१६)
हे योगेश्वर, मैं आपको निरन्तर चिन्तन करता हुआ कैसे जानूं और हे भगवन्, किन-किन भावों द्वारा मैं आपका चिन्तन करूं? (१०.१७)

BG 10.16-17: Please describe to me Your divine opulences, by which You pervade all the worlds and reside in them. O Supreme Master of Yog, how may I know You and think of You. And while meditating, in what forms can I think of You, O Supreme Divine Personality?

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।
भूयः कथय तृप्तिर् हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥१८॥

हे जनार्दन, आप अपनी योगशक्ति एवं विभूतियों को विस्तारपूर्वक फिर से कहिए, क्योंकि आपके अमृतमय वचनों को सुनते हुए मुझे तृप्ति नहीं हो रही है. (१०.१८)

BG 10.18: Tell me again in detail Your divine glories and manifestations, O Janardan. I can never tire of hearing your nectar.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्रीभगवानुवाच हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्य् आत्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्य् अन्तो विस्तरस्य मे ॥१९॥

श्रीभगवान बोले— हे कुरुश्रेष्ठ, अब मैं अपनी प्रमुख दिव्य विभूतियों को तेरे लिए संक्षेप में कहूंगा, क्योंकि मेरे विस्तार का तो अन्त ही नहीं है. (१०.१९)

BG 10.19: The Lord spoke: I shall now briefly describe My divine glories to you, O best of the Kurus, for there is no end to their detail.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २० - **अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।**
**अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥**

हे नींद को जीतने वाले अर्जुन! सम्पूर्ण प्राणियों के आदि, मध्य तथा अन्त में मैं ही हूँ और सम्पूर्ण प्राणियों के अन्तःकरण (हृदय) में स्थित आत्मा भी मैं ही हूँ । यहाँ भगवान् ने अपने सम्पूर्ण विभूतियों का सार कहा है और यह भी दर्शाया है कि वे परमात्मा (वासुदेवः सर्वं हैं) ।

इसि श्लोक से भगवान् अपने विभूतियों का वर्णन आरम्भ करते हैं । भगवान् का चिन्तन साधक अपने प्रिये इष्टदेव के रूप में करता है । उन का चिन्तन दो तरह से होता है -
१. साधक अपना जो इष्ट मानता है, उस के सिवाये दूसरा कोई भी चिन्तन न हो । कभी हो भी जाये तो मन को वहाँ से हटा कर अपने इष्टदेव के चिन्तन में लगा दे और, २. मन में संसारिक विशेषता को लेकर चिन्तन हो, तो उस विशेषता को भगवान् की ही विशेषता समझे । इस दूसरे चिन्तन के लिये ही यहाँ विभूतियों का वर्णन है । तात्पर्य है कि किसी विशेषता को लेकर जहाँ-कहीं वृति जाये वहाँ भगवान् का ही चिन्तन होना चाहिये, उस वस्तु-व्यक्ति का नहीं ।

I am the self, O conqueror of sleep, seated in the heart of all beings. I am the beginning, the middle and also the end of all creation.
Here, by saying that he is the beginning, the middle and the end of all beings, the Lord has given the gist of his divine glories.

The Lord can be thought of in two ways:

1. As of one's favourite. Deity only. In case the mind deviates, it should again be fixed on God.
2. Whatever thoughts come to the mind, should be considered as His manifestation. With this second viewpoint, the Lord, is describing his divine glories.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २१ - **आदित्या नामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।**
**मारीचिर्मरुतामस्मि, नक्षत्राणामहं शशी ॥**

मैं आदिति के पुत्रों में विष्णु (वामन) और प्रकाशमान वस्तुओं में किरणों वाला सूर्य हूँ । मैं मरुतों का तेज और नक्षत्रों का अधिपति चन्द्रमा हूँ ।

I am Vishnu among the twelve sons of Aditi; and the radiant sun among the luminaries; I am the glory of the Maruts, and the moon among stars.

**Aditi's twelve sons namely**: Aryaman, Tvastha, Bhag, Dhata, Mitra, Varun, Amsha, Pusha, Indra, Vaman, Parjanya & Surya

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २२ - **वेदानां सामवेदोऽस्मि, देवानामस्मि वासवः ।**
**ईन्द्रियाणां मनश्चास्मि, भूतानामस्मि चेतना ॥**

मैं वेदों में सामवेद हूँ, देवताओं में इन्द्र हूँ, इन्द्रियों में मन हूँ और प्रणियों की चेतना हूँ । वेदो की जो ऋचाएँ स्वर सहित गायी जाती हैं, उन का नाम सामवेद है । सामवेद में इन्द्ररूप से भगवान् की स्तुति का वर्णन है, इसलिये सामवेद भगवान् की विभूति है ।

Of the Vedas, I am the Samveda, I am Vasawa (Indra) among the gods; of the senses, I am the mind and of living beings, I am consciousness.

Of the four Vedas, Samveda is the most suitable for music. In it, there is the description of the Lord's glory in the form of Indra's glory. So, Samveda is the divine glory of the Lord.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २३ - **रुद्राणां शङ्करश्चास्मि, वित्तेशो यक्षरक्ष साम् ।**
**वसूनां पावकश्चास्मि, मेरुः शिखरि णामहम् ॥**

रुद्रों में शंकर और यक्ष-राक्षसों में कुबेर मैं हूँ । वसुओं में पवित्र करने वाली अग्नि और शिखर वाले पर्वतों में सुमेरु मैं हूँ ।

हर, बहुरूप, त्र्यम्बक, अप्राजित, वृषकपि, शम्भु, कपार्दी, रैवत, मृगव्याध, शर्व और कपाली, **यह ग्यारह रुद्रों में शम्भु अर्थात् शंकर** सबके आधिपति हैं । वे कल्याण प्रदान करनेवाले और कल्याण स्वरूप हैं । इसलिये भगवान् ने इन को अपनी विभूति बताया ।

**कुबेर** यक्ष तथा राक्षसों के आधिपति हैं, साथ-साथ धनके स्वामी भी हैं ।
धर, ध्रव, सोम,अहः,अनिल, अनल, प्रत्युष और प्रभास, आठ वसुओं में **अनल** अर्थात् पावक (**अग्नि**) सब के आधिपति हैं ।

सोने, चाँदी, ताँबे आदि के शिखरों वाले जितने पर्वत हैं, उन में **सुमेरु** पर्वत मुख्य है । यह सोने तथा रत्नों का भण्डार है ।

Among the Rudras, I am Shankar; among the Yaksas (genies), and Raksasas (Demons), I am Kuber. Among the vasus, I am the god of fire, and of the mountains, I am Sumeru.
Shiv Shankar Bhagwan is the Lord of all the eleven Rudras named Har, Bahuroop, Trayambak, Kapali etc. They are the bestowers of beatitude to others. So, Shankar Bhagwan is said to be the Lord's divine glory.
Kuber is the lord of genies and demons. He is also the lord of fabulous wealth, so he is called a Lord's divine glory.
"Agni", i.e., the lord of fire, is the lord of eight Vasus, named Dar, Dhruv, Som etc. The god of fire is said to be the mouth of the Lord through which oblation reaches the deities. So, he is a Lord's divine glory.
Of all the mountains, having mounts of Gold, silver and copper etc., the golden Meru Mountain, is the most important. It is the store house of jewels and diamonds. So, this mountain is God's glory.
Whatever distinction these divine glories have, is the Lord's (Shree Krishna's). So only He, should be thought of in all these glories.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २४ - **पुरोधसां च मुख्यंमां, विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।**
**सेनानी नामहं स्कन्दः, सरसामस्मि सागरः ॥**

हे पार्थ! पुरोहितों में मुख्य बृहस्पति को मेरा स्वरूप समझो । सेनापतियों में कार्तिकेय औ र जलाशयों में सागर मैं हूँ ।

संसार के सम्पूर्ण पुरोहितों में और विद्या-बुद्धि में **बृहस्पति** श्रेष्ठ हैं । ये इन्द्रादि देवताओं के कुल-पुरोहित हैं । इलिये भगवान् ने अर्जुन से बृहस्पति को अपनी विभूतिमानने के लिये कहा है ।

**स्कन्द (कार्तिकेय)** शंकरजी के पुत्र हैं । इन के छः मुख और बारह हाथ हैं । ये देवताओं के सेनापति हैं और संसार के सम्पूर्ण सेनापतियों में श्रेष्ठ हैं । इसलिये भगवान् ने इन को अपनी विभूति बताया है ।

**सागर** - इस पृथ्वी पर जितने जलाशय हैं, उन में सागर सब से बड़ा है। सागर सम्पूर्ण जलाशयों का अधिपति है और अपनी मर्यादा में रहने वाला तथा गम्भीर है। इसलिये भगवान् ने इस को अपनी विभूति बताया है।

Among priests, Oh Partha, know me to be their chief, Brihaspati; among the generals, I am the Skand; of the mass of water, I am the ocean.

**Brihaspati** is the best of all the priests, and he is superior to others in learning and wisdom. He is the preceptor of Lord Indra, the lord of all other devtas, and is their priest. So, he is a divine glory of the Supreme Lord (Krishna).

**Skanda (Swami Kartikay),** is the son of Lord Shankar. He is said, to have six faces and twelve arms. He is the general of the Devtas. So, he is a Lord's divine glory.
Saagar (Ocean) – Of the mass of water, the ocean is the biggest, is very deep and remains within limits. So, it is called a Lord's divine glory.
After beholding these distinctions in the Lord's glories, a striver should think only, of God.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २५ - **महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्।**
**याज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि, स्थावराणां हिमालयः॥**

महा ऋषियों में भृगु और वाणियों में एक अक्षर अर्थात् "ॐ"मैं ही हूँ। सम्पूर्ण यज्ञों में **जपयज्ञ** और स्थिर रहने वालों में हिमालय मैं हूँ।

**महर्षीणां भृगुरहं** - भृगु, अत्रि, मारिचि आदि महार्षियों में भृगुजी बड़े भक्त, ज्ञानी और तेजस्वी हैं।

**गिरामस्म्येकमक्षरम्** - सब से पहले तीन मात्रा वाला प्रणव प्रकट हुआ। फिर प्रणव से त्रिपदा गायत्री, त्रिपदा गायत्री से वेद और वेदों से शास्त्र, पुराण आदि सम्पूर्ण वाङ्मय जगत प्रकट हुआ। अतः इन सब का कारण होने से और इन सब में श्रेष्ठ होने से भगवान् ने एक अक्षर -प्रणव को अपनी विभूति बताया।

**याज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि** - मन्त्रों सें जितने यज्ञ किये जाते हैं, उनमें अनेक वस्तु-पदाथों की, विधियों की, आवश्यकता पड़ती है और उन को करने में कुछ-न-कुछ दोष आ ही जाता है। प्ररन्तु जपयज्ञ अर्थात् भगवननाम का जप करने में किसी पदार्थ यह विधि की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस को करने में दोष आना तो दूर रहा, प्रत्युत सभी दोष नष्ट हो जाते हैं। नाम जप से कल्याण होता है। इसलिये

भगवान् ने जपयज्ञ को अपनी विभूति बताया ।

**स्थावराणां हिमालयः** - स्थिर रहनेवाले जितने भी पर्वत हैं, उन सब में हिमालय तपस्याका स्थल होने से महान पवित्र है और सबका आधिपति है । गंगा, यमुनाादि जितनी तीर्थस्वरूप पवित्र नदियाँ हैं, वे सभी प्रायः हिमालय से प्रकट होती हैं ।

Among the great seers I am Bhrigu, of speech I am the monosyllable "Om", of sacrifice (Yag), I am the Japp yag, the constant repetition of the Lord's name, and of the immovable, the Himalay.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २६ - **अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां, देवर्षीणां च नारद ।**
**गन्धर्वाणां चित्ररथः, सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥**

सम्पूर्ण वृक्षों में पीपल, देवर्षियों में नारद, गन्धर्वों में चित्ररथ और सिद्धों में कपिल मुनि मैं हूँ ।

**पीपल** एक सौम्य वृक्ष है । इस के नीचे हर एक पेड़ लग जाता है और यह पहाड़, मकान की दीवार, छत आदि कठोर जगह पर भी पैदा हो जाता है ।

पीपल वृक्ष के पूजनकी बड़ी महिमा है । आयुर्वेद में बहुत से रोगों का नाश करने की शक्ति पीपल वृक्ष में बताई गयी है । इन सब दृष्टियों से भगवान् ने पीपल को अपनी विभूति बताया है ।

**देवर्षि** भी कई हैं और नारद भी कई हैं, पर "**देवर्षि नारद**" एक ही हैं । यह भगवान् के मन के अनुसार चलते हैं और भगवान् की जैसी लीला करनी होती है, ये पहले से ही वैसी भूमिका तैयार कर देते हैं । इनकी बात पर, मनुष्य, देवता, असुर, नाग आदि सभी विश्वास करते हैं । इसलिये नारदजी को भगवान् का मन कहा गया है ।

**गन्धर्वाणां चित्ररथः** स्वर्ग के गायकों को गन्धर्व कहते हैं और उन सभी गन्धवों में चित्ररथ मुख्य हैं । अर्जुन के साथ इन की मित्रता रही और इन से ही अर्जुन ने गानविद्या सीखी थी । गानविद्या में अत्यन्त निपुण और गन्धर्वों में मुख्य होने से भगवान् ने इनको अपनी विभूति बताया है ।

**सिद्धानां कपिलो मुनिः** सिद्ध दो तरह के होते हैं - एक तो साधन कर के सिद्ध बनते हैं और दूसरे जन्मजात सिद्ध होते हैं । कपिलजी जन्मजात सिद्ध हैं और इन को आदिसिद्ध कहा जाता है । ये कर्दमजी के यहाँ देहूति के गर्भ से प्रकट हुए थे । ये

सांख्य के आचार्य और सम्पूर्ण सिद्धों के गणाधी हैं । इसलिये भगवान् ने इनको अपनी विभूति बताया ।

Of all trees I am Aswatha (the holy Pipal tree or fig tree); among the celestial sages, Narad; among the Gandharvas (celestial musician) I am Chitratha; among the Sidhas (the perfect) sage Kapil.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २७ - **उच्चैः श्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।**
**ऐरावतं गजेन्द्राणां, नराणां च नराधिपम् ॥**

घोड़ो में अमृत के साथ समुद्र से प्रकट होनेवाले उच्चोःश्रवा नामक घोड़े को, श्रेष्ठ हाथियों में यरावत नामक हाथी को और मनुष्यों में राजा को मेरी विभूति मानो ।

**उच्चैः श्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्** - समुद्रमन्थन के समय प्रकट होनेवाले चौदह रत्नों में उच्चैःश्रवा घोड़ा भी एक रत्न है । यह इन्द्रका वाहन और सम्पूर्ण घोड़ों का राजा है । इसलिये भगवान् ने इसको अपनी विभूति बताया है ।

**ऐरावतं गजेन्द्राणां** - हाथियों के समुदाय में जो श्रेष्ठ होता है, उसको गजेन्द्र कहते हैं । ऐसे गजेन्द्रों में भी यरावत हाथी श्रेष्ठ है । यरावत हाथी की उत्पति भी समुद्र से हुई है और यह भी इन्द्र का वाहन है । इसलिये भगवान् ने इसको अपनी विभूति बताया है ।

**नराणां च नराधिपम्** - सम्पूर्ण प्रजा का पालन, संरक्षण, शासन करने वाला होने से राजा सम्पूर्ण मनुष्यों में श्रेष्ठ है । साधारण मनुष्यों की अपेक्षा राजा में भगवान् की ज्यादा शक्ति रहती है । इसलिये भगवान् ने राजा को अपनी विभूति बताया है ।

Among horses, know me to be Ucchesarva, begotten of the churning of the ocean for nectar; of lordly elephants, Yarawat (Indra's elephant); among men, a king.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २८ - **आयुधानामहं वज्रं, धेनूनामस्मि कामधेक् ।**
**प्रजनश्चास्मिकन्दर्पः, सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥**

आयुधों में वज्र और धेनुओं में कामधेनु मैं हूँ । सन्तान उत्पति का हेतु कामदेव मैं हूँ और सर्पों में वासुकि मैं हूँ ।

Of weapons, I am the Vajra (thunderbolt); of cows I am the celestial cow Kaamdhenu; I am Kaam, the desire responsible for procreation; of serpents, I am Vasuki.

**आयुधानामहं वज्रं** - जिन से युद्ध किया जाता है उस को आयुध (अस्त्र-शस्त्र) कहते हैं। उन आयुधों में इन्द्र का वज्र मुख्य है। यह दधीचि ऋषि की हडिड्यों से बना हुआ है और इसमें दधीचि ऋषिकी तपस्या का तेज है। इसलिये भगवान् ने वज्र को अपनी विभूति कहा।

**धेनूनामस्मि कामधेक्** - नयी ब्यायी हुई जाय को धेनु कहते हैं। सभी धेनुओं में कामधेनु मुख्य है जो समुद्र मन्थन से प्रकट हुई थी। यह सम्पूर्ण देवताओं और मनुष्यों की कामना पूर्ति करनेवाली है। इसलिये यह भगवान् की विभूति है।

**प्रजनश्चास्मिकन्दर्पः** - संसारमात्र की उत्पति काम से ही होती है। धर्म के अनुकूल, केवल संतान की उत्पति के लिये, सुख बुद्धि का त्याग करके जिस काम का उपयोग किया जाता है, वह काम भगवान् की विभूति है।

**सर्पाणामस्मि वासुकिः** - वासुकि सम्पूर्ण सर्पो के अधिपति और भगवान् के भक्त हैं। समुद्र मन्थन के समय इनी की मन्थन डोरी बनायी गयी थी। इसलिये भगवान् ने इनको अपनी विभूति बताया है।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २९ - **अन्नतश्चास्मि नागानां, वरुणो याद सामहम्।**
**पितृणाम,र्यमा चास्मि, यमः संयम तामहम्॥**

नागों में अनन्त (शेषनाग) और जल जन्तुओं का अधिपति वरुण मैं हूँ। पितरों में अरियामा और शासन करने वालों में यमराज मैं हूँ।

Of the Nagas (water-snakes) I am Anata; of aquatic creatures and water-gods, I am Varun; among the **manes** (past ancestors) I am Aryama; and among regulators of life, I am Yama, the god of death.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३० - **प्रहलादश्चास्मि दैत्यानां, कालः कलयतामहम्।**
**मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं, वैनतेयश्च पक्षिणाम्॥**

दैत्यों में प्रहलाद और गणना करनेवालों में (ज्योतिषियों) में काल मैं हूँ, तथा पशुओं में सिहं और पक्षियों में गरुड़ मैं हूँ।

Among the demons I am the Prahalad; among reckoners of existence, I am time; among beasts, I am the lion; and among birds, I am the Garuda (the vehicle of Lord Vishnu).

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३१ - **पवनः पवतामस्मि, रामः शस्त्र भृतामहम् ।**
**झषाणां मकरश्चास्मि, स्त्रोत सामस्मि जाहन्नवी ॥**

पवित्र करनेवालों में वायु और शस्त्रधारियों में राम मैं हूँ । जल-जन्तुओं में मगर मैं हूँ और नदियों में गङ्गाजी मैं हूँ ।

Among purifiers, I am the wind; among warriors, I am Lord Ram; among Fish, I am an alligator; and among rivers, I am the Ganges.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३२ - **सर्गाणाम अदिरन्तश्च, मध्यं चैवाहम अर्जुन ।**
**अध्यात्मविद्या विद्यानां, वादः प्रवदता महम् ॥**

हे अर्जुन, सम्पूर्ण सृष्टियों के आदि, मध्य तथा अन्त में मैं ही हूँ । विद्याओं में अध्यात्मविद्या (ब्रह्मविद्या) और परस्पर शास्त्रार्थ करनेवालों का (त्व-निर्णय के लिये किया जानेवाला) वाद मैं हूँ ।

Oh Arjun! I am the beginning, the end, and also the middle of all creation. Of sciences, I am the science of the self (soul); in debates I am logic.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३३ - **अक्षराणाम अकारोऽस्मि, द्वन्द्वः सामासि कस्य चः ।**
**अहमेवाक्षयः कालो, धाताहं विश्वतोमुखः ॥**

अक्षरो में अकार और समासो में द्वन्द्व सामास मैं हूँ । अक्षयकाल अर्थात् काल का भी महाकाल तथा सब ओर मुख वाला, धाता (सब का पालन-पोषण करनेवाला भी) मैं ही हूँ ।

Of letters, I am 'A'; of word compounds, I am the dual (Dvandva) the copulative. I am verily the endless time; I am the sustainer of all, having my face, on all sides.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३४ - **मृत्यु सर्वहरश्चाह मुद्भवश्च भविष्यताम् ।**
**कीर्तिः श्रीवाक्य नारीणां, स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥**

सब का हरण करनेवाली मृत्यु और भविष्य में उत्पन्न होने वाला मैं हूँ तथा स्त्री जाति में कीर्ति, श्री, वाक् (वाणी), स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा मैं हूँ ।

I am the all-destroying death. I am the origin of future beings. Of females, I am Kirti, Shree, Vak, Smriti, Medha, Dhriti, and Kshama (the goddesses), presiding over the qualities, fame, fortune, speech, memory, intelligence, steadfastness and forgiveness, respectively.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३५ - **बृहत्साम तथा साम्नां, गायत्री छन्द सामहम् ।**
**मासानां मार्गशीर्षोऽहम, ऋतूनां कुसुमाकरः ॥**

गायी गानेवाली श्रुतियों में बृहत्साम और सब छन्दों में गायत्री छन्द मैं हूँ । बारह महीनों में मार्गशीर्षः और छः ऋतुओं में वसन्त मैं हूँ ।

Of the Sama hymns, I am brahatsam; of the Vedic Meters, I am Gayatri. Of the twelve months of the Hindu calendar, I am Margsirsa; and of seasons, I am the flowery spring.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३६ - **द्यूतं छलयतामस्मि, तेजस्तेजस्विनामहम् ।**
**जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि,सत्त्वं सत्त्व वतामहम् ॥**

छल करनेवालों में जूआ और तेजस्वियों में तेज मैं हूँ । जीतनेवालों की विजय मैं हूँ । निश्चय करनेवालों का निश्चय और सात्त्विक मनुष्यों का सात्विक भाव मैं हूँ ।

I am the dicing of those that cheat; I am the glory of the glorious. I am the victory of the victorious, the resolution of the resolute, the goodness of the good.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३७ - **वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि,पाण्डवानां धनञ्जयः ।**
**मुनीनामप्यहं व्यासः, कवीनाम मुशना कविः ॥**

वृष्णिवंशियों में वसुदेव पुत्र श्रीकृष्ण और पाण्डवों में अर्जुन मैं हूँ । मुनियों में वेदव्यास और कवियों में कवि शुक्राचार्य भी मैं हूँ ।

Among the members of the Vrisni clan (Yadavas), I am Krishna; among the Pandawas, Dhanajaya; among the sages, I am Vyasa; and among the knowing seers, I am the sage Sukrachariye.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३८ - **दण्डो दमयतामस्मि, नीतिरस्मि जिगीषताम् ।**
**मौनं चैवास्मि गुह्यानां, ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥**

दमन करनेवालों में दण्डनीति और विजय चाहनेवालों में नीति मैं हूँ । गोपनिय भाव में मौन मैं हूँ और ज्ञानवानों में ज्ञान मैं ही हूँ ।

I am the authority of those who punish as rulers; I am righteousness in those who seek victory. Of secrets, I am silence, and I am wisdom, of the wise.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३९ - **यच्चापि सर्वभूतानां, बीजं तदहमर्जुन ।**
**न तदस्ति विना यत्स्यान मयाभूतं चराचरम् ॥**

हे अर्जुन ! सम्पूर्ण प्राणियों का जो बीज (मूल-कारण) है, वह बीज भी मैं ही हूँ । वह इसलिये, कि ऐसा कोई प्राणी नहीं है जो मेरे बिना हो अर्थात् चर-अचर सब-कुछ मैं ही हूँ ।

Oh Arjun! I am the seed of all beings. There is no creature, animate (जीवित) or inanimate (निर्जीव), that can exist without me.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर् विस्तरो मया ॥४०॥

हे अर्जुन, मेरी दिव्य विभूतियों का तो अन्त ही नहीं है. मैंने तुम्हें अपनी विभूतियों के विस्तार का वर्णन संक्षेप में कहा है. (१०.४०)

BG 10.40: There is no end to My divine manifestations, O conqueror of enemies. What I have declared to you is a mere sample of My infinite glories.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यद् यद् विभूतिमत् सत्त्वं श्रीमद् ऊर्जितम् एव वा ।
तत् तद् एवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥४१॥

जो भी विभूतियुक्त, कान्तियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है, उसे तुम मेरे तेज के एक अंश से ही उत्पन्न हुई समझो. (१०.४१)

BG 10.41: Whatever you see as beautiful, glorious, or powerful, know it to spring from but a spark of My splendor.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ४२ - **अथवा बहुनैतेन, किं जातेन तवार्जुन ।**
**विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नं, अकांशेन स्थितो जगत् ॥**

अथवा हे अर्जुन! तुम्हे इस प्रकार बहुत सी बातें जानने की क्या आवश्यकता है, जबकि मैं अपने किसी एक अंश से इस सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके स्थित हूँ अर्थात् अनन्त बह्माण्ड मेरे किसी एक अंश में है ।

What need is there for you Arjun, of detailed knowledge? I stand supporting the entire universe, with a single fragment of Myself.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

## गीता दर्पण के दसवे अध्याय का तात्पर्य :-

मनुष्य के पास चिन्तन करने की जो शक्ति है, उस को भगवान् के चिन्तन में ही लगाना चाहिये ।
संसार में जिस-किसी में जहाँ-कहीं विलक्षणता, विशेषता, महता, अलौकिकता, सुन्दरता आदि दीखती हैं, उसमें मन खींचता है, वह विलक्षणता आदि सब वास्तव में भगवान् की ही है । अतः वहाँ भगवान् का चिन्तन होना चाहिये, उस वस्तु, व्यक्ति आदि का नहीं । यही विभूतियों के वर्णन का तात्पर्य है ।

## Gita Essence in English – Chapter 10

The power of thinking and analysis that mankind has, should be used only in God realisation.
Where one's mind is attracted to anyone or anything in this world, where one's extraordinary talent, skill, elegance, supernatural power, beauty, etc are visible, all these qualities are meant to be visualised as those of the Bhagwan Shree Krishna (Almighty God). Hence there should be contemplation of God in all these profound qualities rather than in whom these qualities are seen. This is what the Lord's vibhootis (ie Devine Powers) illustrate in this chapter.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवतगीतासूपरिष्त्सु ब्रह्मविद्यां योगशास्त्रे**
**श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दसवाँऽध्याय ॥१०॥**